प्रेस विज्ञप्ति

गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
पंतनगर, जिला- ऊधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड)

अच्छी पैदावार के लिए गेंहू में करे उचित प्रबंधन

पंतनगर। 22 जनवरी, 2019। अच्छी पैदावार के लिए वैज्ञानिक विधि से की हुई गेहूं की खेती में कम समय, कम मेहनत और कम लागत से ज्यादा उपज मिल सकती है यदि किसान गेहूं की उम्दा उपज के लिए जनवरी एवं फरवरी माह में किये जाने वाले कार्यों का विशेष ध्यान रखें। यह कहना है सस्य विज्ञान विभाग के वरिष्ठ परियोजनाधिकारी, डा. राजीव कुमार एवं सह. प्राध्यापक, डा. अमित केसरवानी का। उन्होंने बताया कि इस समय लगभग सभी किसानों की गेंहू की फसल क्रांतिक अवस्थाओं में होगी ऐसे में किसानों को सिंचाई पर विशेष सावधानी बरतने की जरूरत है साथ ही जिन किसानों ने गेहूं की बुवाई 40 दिन पहले की है उन गेहूं में कल्ले निकलना शुरू हो गया है। इस समय गेंहू की दूसरी सिंचाई करें और गेहूं की 40 दिन वाली फसल में नाइट्रोजन की एक तिहाई मात्रा का छिड़काव कर दें। गेहूं के बुवाई के 60 से 65 दिन बाद पौधों में गांठे बनना शुरू होती है। इस समय गेहूं में तीसरी सिंचाई करनी चाहिए।

उन्होंने बताया कि दिसंबर की बुवाई वाले गेहूं के खेत में चौड़ी पत्ती वाले खरपतवार जैसे बथुआ, जंगली पालक, हिरनखुरी, प्याजी, चटरी और मटरी भी उग आते हैं, जो गेहूं की फसल को काफी नुकसान पहुंचाते हैं। ऐसे में गेहूं को इनसे बचाने के लिए किसान कारफेन्ट्राजोन दवा का छिड़काव करें। गुल्ली डंडा खरपतवार की अधिकता पर किसान फिनोक्साप्रोप अथवा दोनों तरह की खरपतवार होने पर मैट्रिबुजिन का इस्तेमाल कर सकते हैं, ये सभी रसायन बुवाई के 30–35 दिन बाद दिए जाते हैं। विशेषज्ञ कहते हैं कि गेहूं की बुवाई के 25–30 दिन में एवं 45–50 दिन पर निराई-गुड़ाई करें और गेहूं में सिंचाई 25–30 दिन के अन्तर पर जारी रखें। तापमान में गिरावट होने से गेहूं में पत्ती माहूं, जिसे चापा भी कहते हैं, कीट के आने की संभावना बढ़ जाती है। उन्होंने सलाह दी कि इस समय गेहूं के पौधे की जांच नीचे से ऊपर तक अच्छी तरह करें एवं उचित कीटनाशक का उपयोग करें।

वैज्ञानिकों ने बताया कि अगर मौसम तेज हवाओं वाला हो तो सिंचाई को कुछ दिन रोक लेना चाहिए अन्यथा फसल गिरने की संभावना बढ़ जाती है। किसान खेत से जल निकासी की उचित व्यवस्था करें जिससे जल भराव के समय अतिरिक्त जल का समय से निकास हो सके। फरवरी में तापमान बढ़ने की दशा में गेहूं में बीमारियां नजर आने लगती हैं, जिनमें पीला, भूरा तथा काला व अन्य रतुआ रोग प्रमुख हैं। इस रोग सम्बंधी उपचार के लिए उचित फफूंदीनाशक का इस्तेमाल करना चाहिए, ताकि फसल को सुरक्षित रखा जा सके। अगर किसान इन बातों का ध्यान इन जनवरी व फरवरी में रखेंगे तो वे आने वाले समय में गुणवत्तायुक्त अच्छी पैदावार प्राप्त कर पायेंगे।

(१) डा. राजीव कुमार

(२) डा. अमित केसरवानी